eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2022

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER II

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours — 70 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines

---

Downloaded from eduresourceza.com

IEB Copyright © 2022

Downloaded from eduresourceza.com

भाग क

निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो पर पूछे गये प्रशनों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

प्रशन एक

कविता: माता

१.१ १.१.१ कविता "माता" में कवि का संदेश क्या है ?

इस कविता में कवि का संदेश है का जीवन कैसा है । "माता" का मतलब है विधाता, वो जो किसी महत्व व्यक्ति को जनम देते है । नारी के पास एक ऐसा चमत्कार या विशेषता है कि वह नर भी इस दुनिया में लाती है । नारी के पूरी जीवन जाती है दूसरों की सेवा करने में । बचपन से लेकर बुढ़ापा तक उसकी जीवन गुज़र जाते है । गरीबी, टोकरें खाते है, बदनामी का नाम भी सुनते है । लोग सिर्फ़ नारी पर ऊँगली उठाते है । पर जो भी नारी पर असर होते, वे कभी अपने बच्चे का हानि होने नहीं देंगे । उसकी पुत्र प्रेम हमेशा सुरक्षित रखते है । उसकी प्राथना यही है कि किसी पर संकट मत टूटे और उसकी बच्चे कभी न छूटे ।

१.१.२ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में संक्षेप में लिखिए ।

(क) "समय गया आता न लौटकर"

समय बहुत खीमती है । समय एक चीज़ है जो गया तो गया । उसे वापस न पा सकते । उस पल वापस न आ सकते । जो कुछ होते है उस पल में, उसे दुबारा दौड़ सकते लेकिन हमेशा ऐसे नहीं होते । कभी-कभी वो व्यक्ति नहीं रहेंगे । समय के साथ लोग भी जाते है और कभीनहीं लौटते है ।

(ख) "बच्चा बना बुढ़ापा मेरा, सम्मुख खेल रहा है ।"

मेरे सामने सब कुछ एक खेल जैसे है । हमारी उमर भी बहुत छोटी होती है । ये जीवन इस शरीर में चलते रहते, जैसे एक बच्चे की तरह हँसी खुशी खेलते फ़िर बुढापे में उस शरीर को त्याग देते है । ये है माता का जीवन । उसकी बलिदान एक विधाता की तरह है । जनम देते है फिर अन्त कर देते है । ये जिन्दगी का सफर ऐसे ही चलते रहेंगे ।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

(ग) "नन्ही उमर हमारी"

जीवन बहुत छोटी है। ये उमर भी बढते रहते है, लेकिन जब किसी समय पहुचते तो रुख जाते है और आगे बढ़ने को इजाज़त नहीं देते ।
वही अन्त हो जाते है, परन्तु बहुत कम होते है ।

१.१.३ इस कविता में कवि क्यों इतने प्रश्ने पुछ्ते है ?

उन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं । ये ऐसे सवाल है जो सालों से पूछे गए और अब तक कोई नहीं इसे सुधार कर सकते । हर प्रश्न लोगों तक एक संदेश भी पहुचते है । एक ऐसा संदेश जो उनके जीवन बदलने के लिए सोचने लगे ।

१.१.४ "रक्त बिन्दुओं" कविता का अनुसार अर्थ क्या है ?

माता का जीवन सुख, धन और यौवन की कुरबानी है । मेरे खून का हर एक बूँद मुझसे इस दुनिया से जोड़ते है । जब तक शरीर में खून है, तब तक यह माँ जीयेंगी ।

१.२ कविता: हिमालय

१.२.१ कवि ने कविता "हिमालय" क्यों शीर्षक रखा ?

हिमालय कविता में कवि का संदेश यह है, कि हिमालय पहीड़ भारत के सब से ऊँची, सब से खीमती स्थान है । ये विशाल पहाड़ महान है की इसकी इतिहास गवाई है कि हिमालय पहाड़ भारत को कितनी गौरव लाती है । ये भारत की ऐसी नग है कि वह अमर रहेगी । किसी उनको कभी नष्ट नहीं कर सकते । हिमालय के महानता पूरी संसार को पता है । जब भगवान शिव और युदिष्टर हिमालय पर पाँव रखे तो उस परवत महीन बन गई । गंगा नदी भी इस पहाड़ से निकलती है । इस में उसकी पवित्रता चुपी है । यह है कवि का संदेश की उसकी महान्ता हम फ़िर से जगाना होगा ।

Downloaded from eduresourceza.com
IEB Copyright © 2022

Downloaded from eduresourceza.com

१.२.२ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में समझाये ।

"मेरे नगपति ! मेरे विशाल !
साकार, दिव्य, गौरव विराट,
पौरुष के पुँजीभूत ज्वाल !
मेरी जननी के हिम – किरीट
मेरे भारत के दिव्य भाल ।"

मेरे सब से ऊँची, सब से दिव्य, भारत की रत्न हिमालय पहाड़हम सब को नम करते है । आप इतनी शान से खड़े रहते । आप में उन गुण है जिसमें मेरे बाप और मेरी माँ की अस्तित्व है । उनके हर लड़ाई और इतिहास में बसे है । शत्रु ने भी आप पर वार किया परन्तु आप अभी भी वहाँ खड़े है ।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

प्रशन दो

निम्नलिखित दों प्रश्नों में से किन्हीं एक के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए:

प्रशन दो

निम्नलिखित दों प्रश्नों में से किन्हीं एक के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए:

२.१ कहानी: प्रतिज्ञा

"देश में घोर अकाल पडा हुआ था । साल भर से पानी की बूँध भी नहीं पड़ी थी ।"

प्रेमचंद जी के कहानी "प्रतिज्ञा" में, ये शब्दों से आरम्भ किया । चर्चा कीजिए कि कैसे देश इस संकट का हल किया ।

भारत देश में बारिश ना होने से, देश सूखे में पढ़ गए। साल भर एक भी बँध नहीं गिरा । प्रजा बड़ी संकट में पड़ गई। पानी न होने से सारे खेत सखे हो गये और इसी तरह खाना भी नहीं मिले। तेज़ धूप से लोग बिमार हो गये, खाने के बिना भी प्रजा मर गये।

ये संकट किसी राष्ट्र या किसी धर्म का संकट नहीं था । यह एक बड़ी समस्य थी जिसे कोई नहीं हल कर सकते सिवा इश्वर । दिन, हफते और महिने भी चलती गई इसी तरह प्रजा' का उम्मीद नष्ट हो गये ।

अलग-अलग धर्म भी प्रार्थना करने लगे। मुसलमान मसजिद गये और हिन्दूओं ने मंदिर गये ईश्वर को भीख माँगने के लिए। यह उनके आकरी आशा था। एक दुश्चरित आदमी राजा पृथ्वीपाल सिधं सिर्फ अपने आप की सेवा करते थे ।

उसके ऐश और आराम के बिना वह और कोई काम न करते । महिने से वह अपने हवेली से नहीं निकला । यह वजह है कि उसने बाहर के खबर नहीं पता चला। उनके लिए ताजी खाना और शराब मिलते रहे। जब प्रजा उनके पास गये थे सहायता के लिए, उसने साफ इनकार किया प्रजा को मिलने से । जब वह बाहर निकला और अपना जमीन का हाल देखा, तब उसने सहायता की ।

बड़े-बड़े पूजारी संत और महात्माओं ने इंन्द्र देव की पूजा की। चमतकार हुआ और बादल गरजने लगे । कड़ोड़ों लोग खुशी से नाचने लगे । पानी बरसने लगे । यह इनसान, राजा

पृथ्वीपाल जो हमेश अपने ही भोग - विलास में लगे थे, पहली बार अपने प्रजा के लिए कुछ अच्छा किया। राजा ने प्रजा से वचन किया की यह बुरा समय फिर कभी नहीं होंगे। इसी तरह पूरा देश खरा और गर्व था कि यह | बूरी संकट अन्त हो गया था ।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

अथवा

२.२ कहानी: प्रतिज्ञा

२.२.१ राजा पृथ्वीपाल का चरित्र वर्णन कीजिए ?

राजा पृथ्वीपाल सिंह एक दुश्चरित्र मनुष्य थे । अपने भोग - विलास के सिवा और कोई काम न था । महीनों रनिवास से बाहर न निकलते थे । नृत्य , गान और आमोद - प्रमोद की सदा अधिकता रहा करती थी । सारे देश के भाँड़ , भड़वे , लुच्चे और लफंगे उनके सहवासी थे । नित्य कई तरह की शराबें मँगाई जाती थीं । नित्य - नूतन पुष्टिकारक भोजन बनाए जाते थे । उन्हें कविता से प्रेम था ; परन्तु केवल उसी कविता से जिससे विषय - वासनाओं को उत्तेजना मिलती

२.२.२ मुसलमान प्रजा ने क्या किया ?

मुसलमान प्रजा ने मौलाना शेख आबिद अली का दामन पकड़ा । दोनों महात्माओं के हृदयों में दया उत्पन्न हुई । बाबा दुर्लभदास ने समस्त देश के साधु - सन्तों को निमंन्त्रित किया । औलिया आबिद अली ने मुल्लाओं तथा पीरों के पास कासिद रवाना किए । एक सप्ताह में चारों दिशाओं से साधुगण तथा मुल्ला लोग आकर जमा हो गए ।

२.२.३ "प्रतिज्ञा" का अर्थ क्या है ?

प्रतिज्ञा का अर्थ इन्तज़ार है । किसी व्यक्ति या किसी वस्तु ठहरने के लिए । जब समय लगते है किसी चीज़ पाने के लिए ।

२.२.४ कहानी के अनुसार किसी धर्म में प्रार्थना करना कैसे महत्वपूर्ण है ? संक्षेप में लिखिए ।

धर्म सब का पहचान औौर अस्तित्व है । आप जो भी धर्म मानते है उसी धर्म में प्रार्थना कीजिए । प्रार्थना करने से मन की शान्ति भी मिलते है । हर दुख में सुख पाते है । प्रार्थना करने से भी सब को विश्वास दिलाते है । अगर प्रार्थना जैसे वस्तु न होते थे, तो इस दुनिया में सब कुछ अलग होते थे । जब सबको साथ में प्रार्थना करते है, तो सबकी चाहा इस प्रार्थना से पूरे हो जाते है। प्रार्थना में शक्ति होती है । प्रार्थना इश्वर के साथ संबंध विकसित करने में सहायता करती है । प्रार्थना उत्तर प्रदान करती है । प्रार्थना आपको जीवन में दिशा खोजने में सहायता करती है । प्रार्थना आपको आशा और शक्ती देती है । जैसे पानी जीवन में अवश्यकता है, वैसे ही प्रार्थना करना भी अवश्यकता है । इस कहानी में इन अवश्यक वस्तुओं को एक शक्तिशाली तरीके से चित्रित किया गया है ।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

२.२.५ लोग क्यों राजा का दर्शन करने गए ?

नगर - निवासियों ने राजा के पास गए । वे दौड़ते हुए उस स्थान पर आकर जमा हो गए । ऐसा कोई हृदय न था जो राजा की ऐसी नैराश्यपूर्ण दृढ़ता पर द्रवित न हो गया हो । लोगों ने बहुत दीनता से राजा स्वामी से कहा , आप इस कालिमा को धो डालिए , इससे हमारे हृदयों पर चोट लगती है । " राजा ने बड़ी भाव से उत्तर दिया , “ भाइयो , यह कालिमा अब ईश्वर की कृपा और दया के जल से धुलेगी , अन्यथा नहीं ।

२.२.६ जब प्रतिज्ञा अन्त हुआ था, तो उस दृश्य का वर्णन कीजिए ?

बादल फिर गरजने लगे और जल - बिन्दु पृथ्वी पर गिरने लगी । असंख्य मनुष्य भक्ति , श्रद्धा , आनन्द तथा अनुराग से उन्मत्त होकर राजा की ओर दौड़े और उनके चरणों पर गिर पड़े । राजा अभी तक मूर्ति के समान स्थिर खड़े थे । उनके मुख की कालिमा धुल - धुल कर बही जाती थी । उनका दिव्य स्वरूप श्याम घटा से इस प्रकार उदित होता आता था , जैसे बादलों में से चाँद निकलता है ।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

प्रशन तीन

निम्नलिखित प्रशन का सही उत्तर दीजिए ।

प्रशन तीन

निम्नलिखित दो प्रशनों में से किन्हीं एक पूछे गए प्रशनों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

३.१ कहानी: पुरस्कार

"पुरस्कार" कहानी का सारांश लिखिए । आपके उत्तर में भारतीय नारी की महिलाओं की शक्ति पर प्रकाश डालिए |

पुरुस्कार कहानी का लेखक है जयशंकर प्रसाद । उसने यह कहानी जब लिखा था, जब देश में बहुत कठिनता था। देश भक्तों ने देश की आज़ादी के लिए लड़ाई । उस समय में लेखक ने इस तरह के कहानियाँ लिखे थे।

मधुलिका इस कहानी की मुख्य पात्र है । महाराज ने उस से अपने खेत खरीदने चाहा एक उत्सव मनाने के लिए। वह किसी खीमत भुगतान करना चाहा लेकिन मधुलिका बेचना न चाहती थी। दिन, महिनों, सालों चलती गई फिर गरीबी और कठिनता महसूस करने लगे । मधुलिका की खेत राष्ट्र के लिए चुना गय ।यह उसकी पुर्वजनों के खेत थे । भावुक मूल्य ने उसे न बेचने दिया। उसके पिता सैनिक था और वह अपनी बेटी भी देश भक्ति की शिक्षा दिये । किसी परिस्थिति में पहले अपने देश के लिए सोचो । अन्त में वह खुशी-खुशी अपना खेत देती है।

उत्सव में वह एक सुशील नौजवान मिलती है। दोनों में प्रेम होते है और साथ में एके सुन्दर भविष्य दुखने लगे। परन्तु नसीब कुछ और निर्णय लिया था। उसका "प्यार का नाम था अरुण । अरुण एक दुश्मन देश के लिए एक जासूस था । लेकिन मधुलिका के लिए उसका प्यार सच्चा था ।वह मधुलिक से अपना सचाई बताया। उसने यह भी कहाँ की दुशमन् उनपर आक्रमण करना चाहता । वह मधुलिका से कहते हैं। कि वह उसके साथ भाग चलें । मधुलिका उसके साथ जाने के लिए इनकार करती क्योंकी उसका कहना है कि उसकी कर्तव्य है देश की रक्षा करना ।

वह तुरन्त महाराज के पास जाती और उनको दुशमन की आक्रमण के बारे बताती है। देश यूध के लिए तैयार होती । मधुलिका को जल्दी बताने से भारत युद्ध जीत गये । अरुण पकड़ गया और सरकार उन्हें फाँसी की सज़ा देते है । इस कामयाबी से महाराज बहुत खुश हुआ।

Downloaded from eduresourceza.com
IEB Copyright © 2022

Downloaded from eduresourceza.com

इस खुशी में महाराज मधुलिका से पुछते है कि वह क्या पुरुस्कार चाहती है। इसे स्थिती पर वह क्या कह सकती । एक तरफ उसकी प्यार और दूसरी तरफ उसका देश। देश की कर्तव्य वह पूरा की । इसी तरह उसने अपना प्यार गवा दिया और देश का प्यार जीत गया । उसने महाराज से कहा कि वह प्राण दण्ड स्वीकार है । वह कोई और पुरस्कार नहीं चाहिये । उसकी जीवन, जीवन नहीं होंगे अपने जीवन साथी के बिना।

यही है भारतीय महिलाओं की शक्ति । उनके लिए उनका देश उनके मातृ भूमी के प्रेम से ज्यादा महत्व है। वे देश को कभी नहीं' हारने देंगी।

अथवा

३.२ कहानी: पुरस्कार

३.२.१ इस कहानी का लेखक कौन है ?
लेखक के जीवनी के बारे <u>तीन</u> अंक लिखिए ।

इस कहानी का लेखक जयशंकर प्रसाद है । वह बेनारस में पैदा हुआ। हिन्दी साहित्य और हिन्दी रंगमंच में वह एक प्रसिद्ध लेखक थे । उनके बहुत सारे कहानियाँ भारत के इतिहास पर लिखे है।

३.२.२ “पुरस्कार” कहानी के मुख्य पात्र कौन है ?
कहानी में इस पात्र का क्या मूल्य है ?

चरित्र चित्रण की दृष्टि से पुरस्कार कहानी के सभी पात्र आदर्श से अनुप्राणित है, पर मधुलिका जो कहानी की प्रमुख पात्र है, अपने चारित्रिक वैशिष्ट्य के कारण सर्वोपरि मानी गयी है। कहानीकार ने मधुलिका का चरित्रांकन मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर किया है। उसका चरित्र सामान्य भारतीय नारी चरित्र से भिन्न न होते हुए भी अनेक असाधारण तत्वों से निर्मित है। वह जितनी सरल, भोली ,सुन्दर, मधुर और आकर्षक है, अवसर आने पर उतनी ही कठोर, चतुर और साहसी भी है। यद्यपि उसमें नारी हृदय की कमजोरियां विद्यमान हैं, फिर भी उन पर विजय प्राप्त करने की उसमें अपूर्व क्षमता है। आत्माभिमान और कुलशील की रक्षा के लिए वह विषम से विषम परिश्तिती का सामना करने में भी सक्षम है और अपने हृदय की दिव्यता की रक्षा के लिए आत्मबलिदान से भी वह पीछे नहीं हटती। असाधारणरूप से संवेदनशील होने के कारण ही उसे तीव्र अंतद्वंद का सामना करना पड़ता है। इसी अंतद्वंद के चतुर्दिक प्रतिरोध, आत्मोत्सर्ग, क्षमा, दया, प्रेम और सहनशीलता की सुनहली रेखाएं बिछी हैं। राजकुमार अरुण एक आदर्श प्रेमी है। वह मधुलिका के जीवन का प्रकाश है, उसका दिव्य पुरस्कार है।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

३.२.३ इस कहानी में पुरस्कार का उद्देश्य क्या है ?

उद्देश्य की दृष्टि से पुरस्कार कहानी आदर्श प्रधान कहानी है। भावना की अपेक्षा कर्तव्य श्रेष्ठ है, यही आदर्श इस कहानी का मूलाधार है। इसमें देश प्रेम और व्यक्तिगत प्रेम दोनों प्रतिद्वंदी के रूप में सम्मुखीन होते हैं तथा एक दूसरे पर हावी व्यक्तिगत प्रेम को भी अपना गौरव तथा महत्व प्राप्त होता है, पर कालांतर में व्यक्तिगत प्रेम को भी अपना गौरव तथा महत्व प्राप्त होता है। कहानी की नायिका मधुलिका ने देश प्रेम तथा व्यक्तिगत प्रेम दोनों का सम्यक निर्वाह करते हुए उन्हें समान रूप से महत्व दिया है। वह इन दोनों का पालन करके विशेष आदर्श का परिचय देती है और यही कहानी का महत उद्देश्य भी है। प्रसाद जी ने इस कहानी में करुणा, सत्य और उत्सर्ग का आदर्श उपस्थित किया है।

३.२.४ मधुलिका ने <u>तीन</u> बार बलिदान दी ।
हर एक घटनाओं के बारे में लिखिए ।

पहली बार मधुलिका ने कहानी में बलिदान दी जब महाराज ने उनके खेत माँगा । हर साल सरकार किसी किसान की खेत खरीदते उत्सव मनाने के लिए। जब मधुलिका की खेत चुना गया, तो उसने इनकार किया क्योंकि वह खेत उनके पुर्वजनों के खेत थे। गरीबी की वजह, वह अपनी खेत को बलिदान । दुबारा मधुलिका ने अपनी प्यार को बलिदान दी | देश भक्ति के कर्तव्य निभाते हुए वह अपनी प्यार गवा दी | देश भक्ति जीत गया और व्यक्ति प्यार हार गया। अन्त में वह अपनी जान प्रेम के लिए बलिदान दी । यह तीसरा बलिदान उसका पुरस्कार था।

३.२.५ "पुरस्कार" की कहानी का केंद्रीय भाव क्या है ?

यह कहानी प्रेम और संघर्ष की कहानी है ।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

प्रशन चार

निम्नलिखित नाटक "मैं और केवल मैं" से किन्हीं एक के पूछे गये प्रशनों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

नाटक: मैं और केवल मैं

४.१ कार्यस्थल पर संघर्ष के साथ नाटक "मैं और केवल मैं" के शीर्षक की व्याख्या करें ?

"मैं और केवल मैं" की नाटक में अंग्रेजी टॉमसन के दफ्तर में अनेक भारतीय काम करते हैं । एक है निस्टर खन्ना , जो चापलूसी करके उसका प्रियपात्र कर गया है । उसके साथियाँ उस से बदला लेने की ताक में रहते है | उसी दफ्तर में एक अन्य कर्मचारी रामेश्वर है । घर में दूध पीता बच्चा और बहुत बीमार पत्नी है । इसी कारण वह कास बैठा है । | इतने में साथी कृष्णचन्द्र आकर बन्ना की शिकायत करने लगता है । कहता है , कि खन्ना को निकलवा के न छोड़ा तो नाम कृष्णचन्द्र नहीं | रामेश्वर अपने ही विचारों में खोया है , इसलिए ध्यान नहीं देता । तब बेनीशंकर आकर रामेश्वर से उदास होने का कारण पूछता है । वह अपने बीमार बीबी और बच्चे के बारे में बताता है । कृष्णचन्द्र से कहता है कि तुम्हारे बहनोई नगर के मशहूर डॉक्टर है - मैं उन्हें दिखाना चाहता हूँ , कृष्णचन्द्र कोई ध्यान नहीं देता है । उसी समय देवनारायण अ है । उसके पूछने पर रामेश्वर भी उसे अपने दुख की बात कहता एक -एक करके सब रामेश्वर के दुख की बातें सुनते हैं , पर किसी उस पर ध्यान नहीं देता है । तब कृष्णचन्द्र रामेश्वर से कहता कि यदि वह (रामेश्वर) टॉमसन साहब से कहे तो वे खन्ना ने जरूर निकाल देंगे । रामेश्वर स्पष्ट कर देता है कि मैं किसी व अनिष्ट नहीं करूँगा । वे नाराज़ हो कर चले जाते हैं । तब देवनारायण आकर , रामेश्वर को कुछ दिनों की छुट्टी लेकर आराम करने को कहता है । चपरासी महँग आकर रामेश्वर हमदर्दी दिखाती है । देवनारायण समाचार देता है खन्ना के कहने से टॉनसन ने परमानंद को डिसमिस का यह सुनकर रामेश्वर पागल जैसे बन जाता है । उसी समय आता है कि रामेश्वर का बेटा , मोहन , दो मंजिल से गिर कर गया और इस घटना के कारण पत्नी भी मर गई । रामेश्व लगता है कि उसके लिए अब सब समाप्त हो गये । उसी स वहाँ टॉनसन और बन्ना आते हैं । रामेश्वर उन्हें परमानन्द डिसमिस करने पर बुरा - भला कहता है । खन्ना टॉमसन से डिसमिस करने को कहता है । टॉनसन रामेश्वर को समझाताकी कर्तव्य का स्थान भावना से ऊपर है ।४.२ निम्नलिखित पात्रों का चरित्र वर्णन कीजिए ।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

अथवा

४.२ निम्नलिखित पात्रों का चरित्र वर्णन कीजिए ।

४.२.१ खन्ना

अपने स्वार्थ के लिए खन्ना परमानन्द को नौकरी से निकलव देता है । उसे कोई चिन्ता नहीं है कि परमानन्द के परिवार के नौ लोग भूखें करेंगे । इस में एक बूढ़ी माँ भी है । इसी कारण दफ्तर में काम करने वाला , कृष्णचन्द्र उस के संबंन्ध बहुत खराब भाव रखता है । वह कहता है कि यदि नौकरी पर निर्भर न होते तो वह टखन्ना को इतने लंबे समय तक टिकने नहीं देता । लाचार होने के कारण वह कुछ भी नहीं कर सकता ! खन्ना में एक भी अच्छा गुण नहीं है।

४.२.२ कृष्णाचन्द्र

मैं और केवल मैं एकांकी का एक महत्त्वपूर्ण पात्र कृष्णचन्द्र हमेशा केवल अपने ही स्वार्थ का सोचता है । टॉमसन में वह काम करता है एक दूसरे कर्मचारी खन्ना को से निकलवाना है । इसीलिए वह रामेश्वर को टॉमसन से खन्ना कहता की नौकरी से निकालने की बात रामेश्वर आदर्शवादी है इसलिए वह उसकी बातों में नहीं आता कृष्णचन्द्र तब नाराज होकर उसकी तरफ उदासीनता का व्यवहार करता है ।

४.२.३ रामेश्वर

मुख्य पात्र रामेश्वर है । वह एक नौकरी करता है । वह अपनी जबाबदारी अच्छी तरह निभाता है । आदर्शवादी और ईमानदार व्यक्ति है । वह टॉमसन के दफ़तर में काम करता है । वह अपने जिमदारी को अच्छे तरह निभाते है । सब लोग समझते हैं कि अपनी बिमार पत्नी के कारण से काम पर थक जाते । पत्नी बिमार होती फिर भी वह छुट्टी नहीं लेते थे । वह अपना दुख भी दूसरे से भी नहीं कहते थे । उसके लिए कर्तव्य की भावना सब से ऊँची होती है ।

४.३ समाज में देवनारायण, किस तरह का आदमी था ?

वह तटस्थ जैसे चरित्र है। वह सोचता है कि मानवता की अस्तित्वा नहीं होते है। उसने लोगों की चरित्र देखा है इसलिए समझते है कि मानवता जैसे चीज़ अब इस दुनिया में नहीं है। लोग सिर्फ स्वार्थी है । अपने आप के बिना कुछ और सोचते नहीं। वह किसी पर विश्वास नहीं करता । उसका सोच है कि हर एक इनसान मतलबी है और दूसरे के सहायता नहीं करते।

Total: 70 marks

Downloaded from eduresourceza.com
IEB Copyright © 2022